

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Review Paper

विदेशी महिला क्रांतिकारी और भारतीय राष्ट्रवाद भूमिगत नेटवर्क को उनका समर्थन (1915-1947)

सुमन मोर ^{1*}, डॉ. मोहम्मद इरफान ²

¹ पीएचडी, रिसर्च स्कालर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आई. ई. सी. विश्वविद्यालय बड्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

² असिस्टेंट प्रोफेसर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, आई. ई. सी. विश्वविद्यालय बड्दी, सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * सुमन मोर

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.17768998>

सारांश	Manuscript Info.
विदेशी महिला क्रांतिकारियों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक उल्लेखनीय, लेकिन कम मान्यता प्राप्त भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल उपनिवेश-विरोधी राष्ट्रवाद के साथ वैचारिक एकजुटता व्यक्त की, बल्कि भूमिगत गतिविधियों, प्रचार प्रसार, धन जुटाने, अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग और सैन्य सहायता में भी प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। 1915 और 1947 के बीच, कई गैर-भारतीय महिलाएँ भारत और विदेशों में भूमिगत क्रांतिकारी गतिविधियों का हिस्सा बनीं और भारतीय राष्ट्रवादियों और अंतर्राष्ट्रीय उपनिवेश-विरोधी समूहों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य किया। हालाँकि, औपनिवेशिक अभिलेखागार, राष्ट्रवादी इतिहासलेखन और मुख्यधारा के ऐतिहासिक ग्रंथों में उनके योगदान का केवल नाममात्र का उल्लेख है। यह शोधपत्र भूमिगत नेटवर्कों में विदेशी महिला क्रांतिकारियों की भूमिका का अध्ययन करता है और उनकी राजनीतिक एजेंसी पर प्रकाश डालता है।	<ul style="list-style-type: none"> ✓ ISSN No: 2584- 184X ✓ Received: 26-07-2025 ✓ Accepted: 23-08-2025 ✓ Published: 29-08-2025 ✓ MRR:3(8):2025;53-58 ✓ ©2025, All Rights Reserved. ✓ Peer Review Process: Yes ✓ Plagiarism Checked: Yes
	How To Cite this Article सुमन मोर, इरफान अहमद. विदेशी महिला क्रांतिकारी और भारतीय राष्ट्रवाद भूमिगत नेटवर्क को उनका समर्थन (1915-1947). Ind J Mod Res Rev. 2025;3(8):53-58.

कुंजी शब्द: विदेशी महिलाएँ, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, भूमिगत नेटवर्क, अंतर्राष्ट्रीय राष्ट्रवाद, उपनिवेश-विरोधी प्रतिरोध।

1. परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को आमतौर पर क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर लिखा गया है, जिसमें घरेलू नेताओं, संगठनों, आंदोलनों और कांग्रेस शासित प्रांतों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। हालाँकि, ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध उपनिवेश-विरोधी प्रतिरोध भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं था। यह एक वैश्विक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ जिसने विभिन्न राष्ट्रों, समुदायों और वैचारिक समूहों से समर्थन, सहानुभूति और भागीदारी प्राप्त की। इस अंतरराष्ट्रीय आयाम में, एक बेहद खास लेकिन कम शोधित समूह उभर कर आता है: विदेशी महिलाएँ जो भारतीय राष्ट्रवाद से सहानुभूति रखती थीं और जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप

से भूमिगत क्रांतिकारी नेटवर्कों की सहायता की। उनका योगदान केवल नैतिक समर्थन नहीं था, बल्कि इसमें वास्तविक जोखिम, गुप्त संचार, राजनयिक समर्थन, राजनीतिक प्रचार का प्रकाशन और गोपनीय जानकारी का प्रसारण शामिल था। इन विदेशी महिलाओं ने विशेष रूप से 1915 और 1947 के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जब यूरोप, अमेरिका, चीन, जापान, अफ़गानिस्तान और मध्य पूर्व में क्रांतिकारी आंदोलन चल रहे थे।

विदेशी महिला क्रांतिकारी विभिन्न वैचारिक पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखती थीं: कुछ थियोसोफिस्ट थीं (जैसे एनी बेसेंट), कुछ उग्र नारीवादी थीं

(जैसे मार्गरेट कजिन्स), कुछ साम्राज्यवाद-विरोधी पत्रकार थीं (जैसे एग्रेस स्मेली), जबकि अन्य आध्यात्मिक अनुयायी थीं जिन्होंने गांधीवादी दर्शन के माध्यम से राजनीतिक चेतना विकसित की (जैसे मैडलीन स्लेड/मीरा बेन)। उनकी भागीदारी वैश्विक नारीवादी एकजुटता और उपनिवेश-विरोधी संघर्ष के अंतर्संबंध को दर्शाती है। वे न केवल भारतीयों के प्रति सहानुभूति से प्रेरित थीं, बल्कि एक राजनीतिक व्यवस्था के रूप में साम्राज्यवाद और एक वैश्विक शक्ति संरचना के रूप में पितृसत्ता के वैचारिक अस्वीकरण से भी प्रेरित थीं। उपनिवेशवाद केवल क्षेत्रीय प्रभुत्व के बारे में नहीं था; यह नस्लों, संस्कृतियों, धर्मों और लिंगों के प्रभुत्व के बारे में भी था। विदेशी महिलाओं ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक व्यापक वैश्विक मानव मुक्ति परियोजना के हिस्से के रूप में देखा।

भारतीय क्रांतिकारियों के भूमिगत नेटवर्क को संदेश, प्रकाशन, धन, साहित्य और विचारधारा की सीमाओं के पार पहुँचाने के लिए गुप्त माध्यमों की आवश्यकता थी। भारतीय पुरुष क्रांतिकारियों पर लगातार नज़र रखी जाती थी, बंदरगाहों पर उनका पीछा किया जाता था, यूरोप में उनकी निगरानी की जाती थी और पुलिस की खुफिया रिपोर्टों में उनका रिकॉर्ड दर्ज किया जाता था। विदेशी महिलाओं को गतिशीलता का एक निश्चित लाभ प्राप्त था। उनकी नागरिकता, नस्ल और विदेशी पासपोर्ट उन्हें कम संदेह के साथ यात्रा करने, संवाद करने और सामग्री ले जाने की अनुमति देते थे। इससे वे अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्किटों में कूरियर, मध्यस्थ, अनुवादक और राजनीतिक संयोजक के रूप में काम कर पाती थीं। यह पहलू - औपनिवेशिक निगरानी को दरकिनार करने के लिए महिला विदेशी पहचान का उपयोग - सबसे महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियों में से एक है जिसे मुख्यधारा का राष्ट्रवादी इतिहासलेखन पहचानने में विफल रहा है।

क्रमांक	मुख्य बिंदु / पहलू	विवरण
1	भूमिगत नेटवर्क की आवश्यकता	भारतीय क्रांतिकारियों को संदेश, प्रकाशन, धन, साहित्य और विचारधारा सीमाओं के पार पहुँचाने के लिए गुप्त माध्यमों की आवश्यकता थी।
2	पुरुष क्रांतिकारियों की निगरानी	भारतीय पुरुष क्रांतिकारियों पर लगातार नज़र रखी जाती थी — बंदरगाहों, यूरोप और पुलिस रिपोर्टों में उनकी गतिविधियों का रिकॉर्ड रखा जाता था।
3	विदेशी महिलाओं का लाभ	विदेशी महिलाओं को नागरिकता, नस्ल और विदेशी पासपोर्ट के कारण गतिशीलता का लाभ प्राप्त था जिससे उन पर कम संदेह होता था।
4	उनकी भूमिकाएँ	वे कूरियर, मध्यस्थ, अनुवादक और राजनीतिक संयोजक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्किटों में कार्य करती थीं।
5	महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि	विदेशी महिला पहचान का उपयोग औपनिवेशिक निगरानी को दरकिनार करने की रणनीति के रूप में किया गया।
6	इतिहासलेखन की उपेक्षा	मुख्यधारा का राष्ट्रवादी इतिहास इस पहलू को पहचानने में असफल रहा है।

दुर्भाग्य से, मुख्यधारा की भारतीय इतिहास की पाठ्यपुस्तकें, राष्ट्रवादी आत्मकथाएँ और यहाँ तक कि नारीवादी इतिहासलेखन भी विदेशी महिलाओं का उल्लेख केवल प्रतीकात्मक या आध्यात्मिक रूप में ही करते हैं। एनी बेसेंट को ज्यादातर होमरूल आंदोलन के लिए ही याद किया जाता है, उनके रणनीतिक अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क के लिए नहीं। मीरा बेन को केवल "गांधी की शिष्या" के रूप में याद किया जाता है, न कि एक राजनीतिक संदेशवाहक के रूप में। एग्रेस स्मेली को एक लेखिका के रूप में याद किया जाता है, न कि भारतीय क्रांतिकारियों और वैश्विक कम्युनिस्ट नेटवर्क के बीच एक वास्तविक भूमिगत संयोजक के रूप में। इस न्यूनीकरण और महत्वहीनीकरण ने एक अपूर्ण इतिहासलेखन का निर्माण किया है। राष्ट्रवादी आंदोलन को एक पुरुष, भारतीय और क्षेत्रीय परियोजना के रूप में देखा जाता है, जबकि वास्तव में, विदेशी महिलाओं ने इसे एक अंतरराष्ट्रीय, बहु-नस्तीय और लैंगिक-समावेशी संघर्ष बना दिया।^[1]

1915-1947 की अवधि विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यही वह समय था जब गदर आंदोलन, बर्लिन समिति, भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA), चीन में उपनिवेश-विरोधी गतिविधियाँ और साम्यवादी अंतर्राष्ट्रियतावाद जैसे भूमिगत क्रांतिकारी प्रयास एक-दूसरे से दृढ़ता से जुड़े थे। इन क्षेत्रों में कई विदेशी महिलाएँ मौजूद थीं - बौद्धिक ढाँचा प्रदान करती थीं, भारतीय हितों का अंतर्राष्ट्रीयकरण करने के लिए

विदेशी भाषाओं में लेख लिखती थीं, क्रांतिकारी समूहों के बीच गुप्त संदेशवाहक के रूप में कार्य करती थीं, निर्वासित कार्यकर्ताओं के लिए आश्रयों की व्यवस्था करती थीं, और अन्य साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलनों से वैचारिक समर्थन प्राप्त करने के लिए बातचीत करती थीं। इसलिए इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विदेशी महिला क्रांतिकारियों की भूमिका को उजागर करना और उसका पुनर्निर्माण करना है - "सहयोगी" या "समर्थक" के रूप में नहीं, बल्कि राजनीतिक कर्ताओं के रूप में। यह उनकी भूमिका को कथा के केंद्र में लाने का प्रयास करता है।^[2] इसमें तर्क दिया गया है कि इन महिलाओं का अध्ययन करके, हम भारतीय राष्ट्रवाद को केवल एक राष्ट्रीय घटना के रूप में ही नहीं, बल्कि एक वैश्विक राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में भी समझ सकते हैं। यह पुनर्निर्माण न केवल विस्मृत योगदानों को सम्मानित करने के लिए, बल्कि इतिहास-लेखन के पद्धतिगत दृष्टिकोण को बेहतर बनाने के लिए भी आवश्यक है, ताकि भविष्य का इतिहासलेखन अधिक अंतरराष्ट्रीय, अधिक लिंग-सूचित और अधिक समावेशी हो।^[3]

2. साहित्य की समीक्षा

भारतीय राष्ट्रवाद पर साहित्य पारंपरिक रूप से पुरुष भारतीय राजनीतिक कर्ताओं पर केंद्रित रहा है। हालाँकि, कई विद्वानों और प्राथमिक लेखन में उन विदेशी महिलाओं का अप्रत्यक्ष उल्लेख मिलता है जिन्होंने भारतीय संघर्ष का समर्थन किया था।

गेल मिनाल्ट (1982)- ने खिलाफत आंदोलन पर अपने अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला है कि कैसे भारतीय राजनीतिक प्रतिरोध वैश्विक मुस्लिम नेटवर्क से गहराई से जुड़ा था। हालाँकि उनका ध्यान विशेष रूप से विदेशी महिलाओं पर नहीं है, फिर भी उनका काम उपनिवेश-विरोधी आदान-प्रदान की व्यापक अंतरराष्ट्रीय प्रकृति को स्थापित करने में मदद करता है जिसने विदेशी कार्यकर्ताओं के लिए राष्ट्रवादी क्षेत्रों में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया।

एग्रेस स्मैडली की आत्मकथात्मक रचनाएँ (1928, 1930)- महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं जो बर्लिन और चीन में भारतीय क्रांतिकारियों के साथ उनके व्यक्तिगत जुड़ाव का प्रत्यक्ष दस्तावेजीकरण करती हैं। अपनी क्रांतिकारी पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर प्रहार किया और भूमिगत समूहों के लिए गोपनीय संचार का संचालन किया। इससे पता चलता है कि विदेशी महिलाएँ केवल समर्थक नहीं थीं, बल्कि भारतीय क्रांतिकारियों और वैश्विक कम्युनिस्ट नेटवर्क के बीच परिचालन कड़ी के रूप में कार्य करती थीं।

मेडेलीन स्लेड (मीरा बेन)- ने अपनी आत्मकथा द स्पिरिट्स पिलग्रिमेज (1959) में वर्णन किया है कि कैसे उन्होंने गांधी की आध्यात्मिक प्रशंसक के रूप में ब्रिटेन से भारत की यात्रा की, लेकिन धीरे-धीरे राजनीतिक अभियानों और गोपनीय संगठनात्मक कार्यों में शामिल हो गईं। यद्यपि इतिहासलेखन उन्हें एक "भक्त" के रूप में प्रस्तुत करता है, उनके अपने लेखन राष्ट्रवादी ढाँचे में उनकी गहरी भागीदारी को प्रकट करते हैं।

आयरिश नारीवादी मार्गरेट कजिन्स- ने भारत में मताधिकार आंदोलन में योगदान दिया और महिलाओं की राजनीतिक चेतना के निर्माण में मदद की। विद्वानों ने उन्हें एक अंतरराष्ट्रीय नारीवादी के रूप में पहचाना है जिन्होंने ब्रिटिश नारीवाद को भारतीय राष्ट्रवाद से जोड़ा और AIWC जैसे महिला मंचों को संगठित करने में भूमिका निभाई। उनके लेखन से पता चलता है कि कैसे विदेशी नारीवादियों ने राष्ट्रवादी दायरे का विस्तार करने के लिए लैंगिक राजनीति को एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया।

बसु और रे (1997)- ने तर्क दिया है कि राष्ट्रवाद में महिलाओं की भागीदारी को प्रतीकात्मक रूप से नहीं, बल्कि राजनीतिक हस्तक्षेप के रूप में देखा जाना चाहिए। उनका सैद्धांतिक ढाँचा विदेशी महिलाओं को "अनुयायी" के रूप में नहीं, बल्कि उन एजेंटों के रूप में पुनर्व्याख्या करने में मदद करता है जो सचेत रूप से और रणनीतिक रूप से उपनिवेश-विरोधी कार्यवाई में शामिल थीं।

भट्टाचार्य (2005)- दर्शाते हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद का विस्तार वैश्विक कूटनीति, विदेशी गठबंधनों और यूरोप और अमेरिका में साम्राज्य-विरोधी नेटवर्क के माध्यम से हुआ। उनका काम दर्शाता है कि स्वतंत्रता संग्राम अंतरराष्ट्रीय था और इसलिए इस तर्क का समर्थन करता है कि महिलाओं सहित विदेशी प्रतिभागी संरचनात्मक रूप से प्रासंगिक थे।

सरकार और सरकार (2017)- अपने नारीवादी इतिहासलेखन तर्कों में, दर्शाते हैं कि मुख्यधारा के राष्ट्रवादी इतिहास में महिलाओं को व्यवस्थित रूप से हाशिए पर रखा गया था। यह आलोचनात्मक दृष्टिकोण यह समझने में मदद करता है कि मानक राष्ट्रवादी आख्यान में विदेशी महिलाएँ लगभग अदृश्य क्यों रहती हैं। उनका ढाँचा उपेक्षित योगदानों के पुनर्निर्माण हेतु वैकल्पिक अभिलेखों (संस्मरण,

आत्मकथाएँ, विदेशी पत्रिकाएँ) को पुनः प्राप्त करने और पुनः पढ़ने का औचित्य प्रदान करता है।

साथ में, ये कार्य संकेत करते हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद में विदेशी महिलाओं की भागीदारी वास्तव में मौजूद थी, लेकिन इसका पर्याप्त रूप से सिद्धांतीकरण नहीं किया गया है। उनकी भूमिका संस्मरणों, नारीवादी साहित्य, यात्रा वृत्तांतों और अप्रत्यक्ष संदर्भों में बिखरी हुई है बल्कि एक अलग शोध विषय के रूप में अध्ययन नहीं की गई है। इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य विदेशी महिला भागीदारी के अस्तित्व को दर्शाता है, लेकिन इस विषय पर एक व्यवस्थित अकादमिक इतिहासलेखन के अभाव को भी स्पष्ट रूप से प्रकट करता है जो वर्तमान शोध के लिए एक मजबूत औचित्य प्रदान करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिगत क्रांतिकारी नेटवर्क में विदेशी महिलाओं की भागीदारी की जाँच करना।
2. भारत और यूरोप/अमेरिका के बीच उपनिवेश-विरोधी संबंधों की अंतरराष्ट्रीय प्रकृति का विश्लेषण करना।
3. यह पता लगाना कि लिंग और विदेशी पहचान ने महिलाओं को औपनिवेशिक निगरानी से कैसे बचने में सक्षम बनाया।
4. यह आकलन करना कि राष्ट्रवादी इतिहासलेखन ने विदेशी महिलाओं की भूमिका को कम क्यों किया।
5. उनकी भागीदारी का दस्तावेजीकरण करने वाले प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों की पहचान करना।

4. शोध पद्धति

वर्तमान शोध गुणात्मक प्रकृति का है और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में विदेशी महिलाओं की भागीदारी की जाँच के लिए एक ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करता है। यह अध्ययन इस समझ पर आधारित है कि औपचारिक औपनिवेशिक अभिलेखों, राष्ट्रवादी आत्मकथाओं और लोकप्रिय राष्ट्रवादी इतिहासलेखन ने विदेशी महिलाओं के अनुभवों को काफी हद तक नज़रअंदाज़ किया है और इसलिए वैकल्पिक प्रकार के आंकड़ों की खोज करना आवश्यक हो जाता है। इस पद्धति का उद्देश्य न केवल जानकारी एकत्र करना है, बल्कि जानकारी को उसके अर्थ-संदर्भ में व्याख्यायित करना और यह जाँचना भी है कि इन महिलाओं के लेखन और कार्यों में राष्ट्रवादी गतिविधि कैसे दिखाई देती है।

शोध डिज़ाइन

यह शोध एक वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक शोध डिज़ाइन को अपनाता है। यह उन चुनिंदा विदेशी महिलाओं के जीवन-वृत्तांत, संस्मरण, भाषण, राजनीतिक लेखन, पत्रकारीय लेखों और व्यक्तिगत पत्राचार के अध्ययन पर केंद्रित है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी थीं। यह अध्ययन किसी एक स्रोत प्रकार पर निर्भर नहीं है, बल्कि एक बहु-पाठीय पठन पद्धति का उपयोग करता है। टुकड़ों में उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग इन महिलाओं की वैचारिक प्रेरणा, राजनीतिक योगदान और भागीदारी की प्रकृति के बारे में एक संबद्ध आख्यान बनाने के लिए किया जाता है।

डेटा स्रोत

यह अध्ययन पूरी तरह से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। भौगोलिक सीमाओं, कुछ अभिलेखों के डिजिटलीकरण के अभाव और व्यक्तिगत दस्तावेजों की अत्यधिक बिखराव के कारण प्राथमिक अभिलेखीय पहुँच का प्रयास नहीं किया जा सका। इसलिए, यह अध्ययन डिजिटल रिपॉजिटरी में उपलब्ध प्रकाशित आत्मकथाओं, जीवनियों, संपादित पत्रों, विद्वत्तापूर्ण पुस्तकों, समकक्षों द्वारा समीक्षित पत्रिका लेखों, संपादित खंडों, शोध मोनोग्राफ और ऐतिहासिक समाचार पत्रों पर आधारित है। तथ्यात्मक सटीकता का समर्थन करने के लिए JSTOR, प्रोजेक्ट म्यूज, गूगल स्कॉलर और संस्थागत रिपॉजिटरी जैसे शैक्षणिक डेटाबेस से संदर्भ सामग्री का उपयोग किया जाता है। प्रामाणिकता बनाए रखने के लिए, एग्रेस स्मैडली, मीरा बेन और मार्गरेट कजिन्स जैसी विदेशी महिलाओं के लेखन को प्राथमिक प्रकार के ऐतिहासिक आख्यानो के रूप में माना जाता है क्योंकि वे सीधे व्यक्तिगत भागीदारी का वर्णन करते हैं।

डेटा विश्लेषण की विधि

यह शोध विषयगत सामग्री विश्लेषण का उपयोग करता है। प्रेरणा, राजनीतिक सहानुभूति, वैचारिक प्रभाव, संगठनात्मक भूमिका, संचार नेटवर्क और व्यक्तिगत बलिदान जैसे विशिष्ट विषयों की पहचान की जाती है। इन विषयों का पता लगाने के लिए प्रत्येक पाठ को कई बार पढ़ा जाता है। विदेशी महिलाओं के आत्म-वर्णन और द्वितीयक विद्वत्तापूर्ण कृतियों में उनके बारे में दिए गए वर्णनों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है। इससे वास्तविक भागीदारी और भागीदारी के प्रतिनिधित्व के बीच अंतर स्थापित करने में मदद मिलती है। यह पद्धति नारीवादी इतिहासलेखन के अनुरूप भी है, जो "छिपे हुए" कर्ताओं और "असूचीबद्ध" योगदानों को उजागर करने पर जोर देती है।

क्षेत्र और परिसीमन

यह अध्ययन 1915-1947 के बीच की अवधि तक सीमित है क्योंकि यह जन राष्ट्रवाद, असहयोग, राजनीतिक जागृति और अंतरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद-विरोधी नेटवर्किंग का चरम चरण था। केवल उन्हीं महिलाओं को शामिल किया गया है जिनकी भागीदारी का भारतीय राष्ट्रवादी प्रक्रिया पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष राजनीतिक प्रभाव पड़ा। जिन महिलाओं ने केवल भारत की यात्रा की या बिना किसी राजनीतिक जुड़ाव के भारतीय संस्कृति के बारे में लिखा, उन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया है। व्यावहारिक बाधाओं के कारण अध्ययन को अंग्रेजी भाषा के स्रोतों तक सीमित रखा गया है।

नैतिक विचार

यह शोध वैचारिक और पाठ्य-आधारित है। इसमें किसी भी मानवीय विषय की भागीदारी नहीं है, कोई व्यक्तिगत साक्षात्कार नहीं है, और इसलिए कोई नैतिक जोखिम नहीं है। हालाँकि, इस कार्य में परामर्शित सभी विद्वानों और स्रोतों को उचित श्रेय और उद्धरण दिया गया है।

5. आँकड़ों का विश्लेषण और चर्चा

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में विदेशी महिलाओं की भागीदारी कोई आकस्मिक घटना नहीं थी; यह एक ऐतिहासिक रूप से निर्धारित और

वैचारिक रूप से प्रेरित प्रक्रिया थी। संघर्ष में उनकी उपस्थिति बीसवीं सदी के आरंभिक राजनीति में साम्राज्यवाद-विरोधी वैश्विक स्वरूप को दर्शाती थी।^[1] विदेशी महिलाओं के लेखन, क्षेत्रीय अनुभवों और राजनीतिक नेटवर्क के विश्लेषण से पता चलता है कि उनकी भूमिका त्रि-आयामी थी - (i) वे भारत और वैश्विक दुनिया के बीच मध्यस्थ बनीं, (ii) वे भारत के भीतर राजनीतिक कर्ता बनीं, (iii) वे भारत के बाहर भारत की राष्ट्रवादी स्मृति की अभिलेखीय संवाहक बनीं। इसलिए उनकी सक्रियता को केवल 'बाहर' से समर्थन के रूप में नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद की संरचना के 'अंदर' सक्रिय भागीदारी के रूप में समझा जाना चाहिए।^[2]

1. राजनीतिक प्रेरणा और सहानुभूति का प्रश्न

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने वाली अधिकांश विदेशी महिलाएँ संयोगवश शामिल नहीं हुईं। वे इसलिए शामिल हुईं क्योंकि वे उपनिवेशवाद-विरोधी, समाजवादी, आध्यात्मिक या मानवीय मूल्यों से वैचारिक रूप से प्रभावित थीं। मीरा बेन (मेडेलीन स्लेड) अहिंसा और सादगी के गांधीवादी दर्शन से प्रेरित थीं; एग्रेस स्मैडली समाजवादी और साम्यवादी नेटवर्क के माध्यम से आई और उपनिवेशवाद को एक हिंसक पूंजीवादी सत्ता संरचना के रूप में देखा।^[3] मार्गरेट कजिन्स महिला मताधिकार आंदोलन से इस आंदोलन में शामिल हुईं और राष्ट्रवाद को महिला अधिकारों का एक हिस्सा समझा। उनके आदर्शों ने उन्हें सांस्कृतिक दूरी को दूर करने में मदद की। उन्होंने "विदेशी पर्यवेक्षकों" के रूप में भाग नहीं लिया, बल्कि राजनीतिक रूप से सक्रिय व्यक्तियों के रूप में कार्य किया। उनकी सहानुभूति भावनात्मक सहानुभूति नहीं थी - यह एक वैचारिक स्थिति थी। उनका मानना था कि भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लड़ाई नस्लीय पदानुक्रम की एक वैश्विक व्यवस्था के विरुद्ध लड़ाई थी। इसीलिए वे गिरफ्तारी, जेल, निर्वासन, सेंसरशिप और निगरानी का जोखिम उठा सकती थीं।^[4]

2. भूमिगत नेटवर्क के भीतर भूमिका

1915-1947 के बीच भारत के भीतर कई भूमिगत आंदोलन संचालित हुए - शुरुआती वर्षों में गंदर नेटवर्क से लेकर, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कांग्रेस के भूमिगत नेटवर्क तक, और बंगाल और संयुक्त प्रांत में क्रांतिकारी नेटवर्क तक। विदेशी महिलाएँ महत्वपूर्ण हो गईं क्योंकि उनके पास कुछ रणनीतिक लाभ थे: वे अधिक स्वतंत्र रूप से घूम सकती थीं, शुरुआत में औपनिवेशिक खुफिया एजेंसियों द्वारा उन पर कम संदेह किया जाता था, और वे हानिरहित व्यक्तिगत पत्राचार के रूप में प्रच्छन्न दस्तावेज या संदेश ले जा सकती थीं।^[5]

एग्रेस स्मैडली ने अपनी पत्रकारीय हैसियत का इस्तेमाल भारतीय क्रांतिकारी मुद्दों पर अंतराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने के लिए किया। कुछ विदेशी महिलाओं ने कूरियर की भूमिका निभाई, कुछ ने गुप्त दस्तावेजों का अनुवाद किया, और कुछ ने सुरक्षा-गृहों में मदद की। ब्रिटिश निगरानी बढ़ने पर उनकी भागीदारी बदल गई। 1930 के दशक के मध्य के बाद उन पर कड़ी नज़र रखी जाने लगी। लेकिन वे अभी भी राजनीतिक संचार और अंतराष्ट्रीय प्रचार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी बनी रहीं।

3. संचार और वैश्विक वकालत के माध्यम से योगदान

विदेशी महिलाओं ने भारतीय राष्ट्रवादी संघर्ष को वैश्विक समाचार में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और जर्नलों में उनके लेखों ने भारत के लिए राजनीतिक दबाव और अंतर्राष्ट्रीय सहानुभूति पैदा की। एग्रेस स्मैडली ने विदेशी समाचार पत्रों के लिए लिखा और ब्रिटिश शासन के दमन का वर्णन किया। मार्गरेट कजिन्स ने कानूनी सुधारों और महिला शिक्षा के लिए अभियान चलाया और औपनिवेशिक नौकरशाही की आलोचना की। मीरा बेन ने विदेशी सरकारों को पत्र लिखे और गांधीजी के पक्ष का प्रतिनिधित्व करने के लिए लंदन भी गई।^[6]

उनके संचार ने औपनिवेशिक प्रचार को ध्वस्त करने में मदद की कि भारतीय स्वशासन के योग्य नहीं हैं। उन्होंने पश्चिमी जनमत की नज़र में भारतीय संघर्ष को मानवीय रूप दिया। यह कार्य महत्वपूर्ण था क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्य भारतीयों को 'बच्चों जैसा' या 'असभ्य' बताकर औपनिवेशिक शासन को उचित ठहराता था। जब पश्चिमी महिलाओं ने भारतीय राष्ट्रवादियों को बुद्धिमान, नैतिक और जिम्मेदार बताया, तो इससे औपनिवेशिक औचित्य को धक्का लगा।^[7]

4. आध्यात्मिक बंधन, सांस्कृतिक शिक्षा और स्थानीय एकीकरण

ब्रिटिश मेमसाहब संस्कृति के विपरीत, जिसने श्वेत महिलाओं को विशिष्ट एंग्लो-इंडियन क्लबों में अलग-थलग कर दिया था, इन महिलाओं ने सांस्कृतिक सीमाओं को मिटा दिया। मीरा बेन ने भारतीय पहनावे, खान-पान और कताई की प्रथाओं को अपनाया। स्मैडली राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच रहती थीं। उनका सांस्कृतिक एकीकरण सतही पर्यटन नहीं था - यह एक गहरी राजनीतिक एकजुटता थी। वे दान नहीं कर रही थीं; वे राष्ट्रवादी सामाजिक दुनिया का हिस्सा बन रही थीं।^[8] यह बहुत महत्वपूर्ण है - क्योंकि यह साबित करता है कि उपनिवेश-विरोधी एकजुटता नस्ल या भूगोल तक सीमित नहीं है। यह एक सार्वभौमिक राजनीतिक नैतिकता है।

5. मुख्यधारा के भारतीय इतिहासलेखन ने उन्हें क्यों मिटा दिया?

भारत का उत्तर-औपनिवेशिक राष्ट्रवादी इतिहास लेखन मुख्य रूप से इन पर केंद्रित था:

- भारतीय पुरुष नेता
- भारतीय राजनीतिक संगठन
- भारतीय क्षेत्रीय राष्ट्रवाद

विदेशी महिलाएँ इस राष्ट्रीयकृत संरचना में फिट नहीं बैठती थीं। उन्होंने इस धारणा को झकझोर दिया कि केवल भारत में जन्मे व्यक्ति ही भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माता थे। वे अंतरराष्ट्रीय शक्ति, वैश्विक बौद्धिक आदान-प्रदान और वैकल्पिक नारीवादी राजनीतिक नेटवर्क का प्रतिनिधित्व करती थीं।^[9] राष्ट्रवादी इतिहासलेखन (विशेषकर 1950-1980 के बीच) राष्ट्रवाद को "भारत में निर्मित" बताकर शुद्ध करना चाहता था। इसलिए उनके नाम धीरे-धीरे मुख्यधारा की पाठ्यपुस्तकों से गायब हो गए।

इसके अलावा, विदेशी महिलाओं को वामपंथी, गांधीवादी, नारीवादी, शांतिवादी और मानवतावादी विमर्शों से जोड़ा गया। ये औपचारिक राष्ट्रवादी इतिहासलेखन के लिए सहज श्रेणियाँ नहीं थीं।

अध्ययन की सीमाएँ

1. अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर करता है; प्राथमिक अभिलेखीय दस्तावेज़ उपलब्ध या सुलभ नहीं थे।
2. विदेशी महिलाओं के कई निजी पत्र, डायरियाँ और गुप्त संचार डिजिटल नहीं हैं, इसलिए विस्तृत तथ्यात्मक सत्यापन कठिन है।
3. साहित्य में केवल चुनिंदा प्रसिद्ध विदेशी महिलाएँ (जैसे मीरा बेन, एग्रेस स्मैडली, मार्गरेट कजिन्स) ही उपलब्ध हैं; अज्ञात या कम प्रलेखित महिलाएँ अदृश्य रहती हैं।
4. उस समय गुप्त गतिविधियों को जानबूझकर गुप्त रखा जाता था, इसलिए साक्ष्य सीमित और प्रायः अप्रत्यक्ष हैं।
5. शोध केवल भारतीय संदर्भ तक ही सीमित है, जबकि विदेशी महिलाएँ अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क (यूरोप, अमेरिका, जापान आदि) के माध्यम से भी काम करती थीं, जिनका पूरी तरह से विश्लेषण नहीं किया जा सका।
6. अध्ययन केवल अंग्रेजी भाषा की सामग्री तक ही सीमित है; अन्य भाषाओं (जर्मन, फ्रेंच, जापानी, आयरिश आदि) के स्रोतों को शामिल नहीं किया गया है।
7. समय और अवधि की सीमाओं के कारण, यह शोध उनकी राजनीतिक यात्रा की संपूर्ण समयरेखा को विस्तार से शामिल नहीं कर सकता है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विदेशी महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण, बहुआयामी और आम तौर पर स्वीकार की गई तुलना में कहीं अधिक राजनीतिक था। वे केवल सहानुभूति रखने वाली बाहरी महिलाएँ नहीं थीं, बल्कि सक्रिय भागीदार थीं जिन्होंने वैचारिक प्रतिबद्धता, भावनात्मक एकजुटता और साम्राज्यवाद-विरोध में बौद्धिक विश्वास के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद में प्रवेश किया। पत्रकारिता, लेखन, भाषणों, भूमिगत सहायता, अंतर्राष्ट्रीय प्रचार अभियानों और व्यक्तिगत बलिदानों के माध्यम से, उन्होंने भारत के अंदर और बाहर, दोनों जगह भारतीय आंदोलन को मज़बूत करने में मदद की। उन्होंने औपनिवेशिक दुष्प्रचार को चुनौती दी, ब्रिटिश साम्राज्य पर वैश्विक नैतिक दबाव बनाया और भारतीय राष्ट्रवाद के संदेश को महाद्वीपों में फैलाने में मदद की। हालाँकि, मुख्यधारा के भारतीय इतिहासलेखन ने राष्ट्रवादी विशिष्टता और पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों के कारण उनकी भूमिका को बड़े पैमाने पर नज़रअंदाज़ या कम करके आंका। उनके अनुभवों को हाशिये पर धकेल दिया गया क्योंकि उन्होंने इस पारंपरिक धारणा को तोड़ दिया कि केवल भारतीय ही भारत के लिए लड़े थे। इसलिए, इन विदेशी महिलाओं को ऐतिहासिक लेखन में शामिल करना केवल एक तथ्यात्मक सुधार नहीं है; यह स्वतंत्रता आंदोलन की अधिक व्यापक और वैश्विक समझ की दिशा में एक आवश्यक कदम है। उनके योगदान को फिर से पढ़ने और फिर से लिखने से उन्हें इतिहास के सही कर्ता के रूप में पुनर्स्थापित करने में मदद मिलेगी। उनकी भागीदारी अंततः यह साबित करती है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक वैश्विक उपनिवेश-विरोधी आंदोलन था, जिसमें विदेशी महिलाओं ने महत्वपूर्ण और यादगार भूमिका निभाई थी।

संदर्भ

1. बेसेंट ए. हाउ इंडिया रॉट फॉर फ्रीडम. लंदन प्रेस; 1917.
2. कज़िंस एम. इंडियन वुमनहुड टुडे. मद्रास: विमेंस प्रिंटिंग प्रेस; 1940.
3. स्मैडली ए. डॉटर ऑफ़ अर्थ. न्यूयॉर्क; 1928.
4. स्मैडली ए. चाइनाज़ रेड आर्मी मार्चेस. न्यूयॉर्क; 1930.
5. फ़िशर एल. द लाइफ़ ऑफ़ महात्मा गांधी. हार्पर; 1950.
6. स्लेड एम. द स्पिरिट्स पिलग्रिमेज. लंदन; 1959.
7. दास एस. ट्रांसनेशनल फेमिनिज़्म इन कोलोनीयल इंडिया. रूटलेज; 2007.
8. हसन एम. विमेन, जेंडर एंड नेशन इन इंडिया. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 2019.
9. मिनाल्ट जी. खिलाफत आंदोलन. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस; 1982.
10. भट्टाचार्य एस. भारत और विश्व: भारतीय राष्ट्रवाद के वैश्विक आयाम. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2005.
11. एंड्रयूज सी.एफ. महात्मा गांधी: उनका जीवन और कार्य. लंदन: जॉर्ज एलन एंड अनविन; 1931.
12. बेन एम. आत्मा की तीर्थयात्रा. दिल्ली: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस; 1959.
13. कज़िंस एम. आज का भारतीय नारीत्व. बॉम्बे: अखिल भारतीय महिला सम्मेलन; 1947.
14. फोर्ब्स जी. आधुनिक भारत में महिलाएँ. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 1996.
15. गांधी एम.के. भारतीय स्वतंत्रता के विदेशी मित्रों पर हरिजन लेखन. अहमदाबाद: नवजीवन; 1940.
16. जयवर्धने के. तीसरी दुनिया में नारीवाद और राष्ट्रवाद. लंदन: जेड बुक्स; 1986.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.